



बाबा अंबेडकर

— संकलित

दृढ़ संकल्प, कठोर परिश्रम करके कोई भी व्यक्ति अपने जीवन में सफलता प्राप्त कर सकता है। महापुरुष बनने के लिए मनुष्य में ये गुण होने चाहिए। एक साधारण दलित परिवार में जन्म लेकर बाबा साहब अंबेडकर ने अपने इन्हीं गुणों के बल पर भारत के इतिहास में अपना नाम अमर कर दिया। विपरीत परिस्थितियों से जूझकर उन्होंने अपने संकल्प को अंततः पूरा किया।

इस पाठ में हम सीखेंगे— परस्पर विरोधी शब्दों का वाक्य में प्रयोग, विधिवाचक, निषेधात्मक, प्रश्नवाचक तथा आदेशात्मक वाक्य, सरल एवं संयुक्त वाक्य, प्रवाहपूर्वक पढ़ना।

संध्या हो रही है। पश्चिम दिशा में लाली फैल रही है। पक्षी चहचहाते हुए अपने घोंसलों की ओर लौट रहे हैं। बड़ौदा के राजमार्ग पर पेड़ के नीचे एक युवक बैठा है। वह फूट-फूटकर रो रहा है। आँसुओं का झरना लगातार झर रहा है। कोई धीरज नहीं देता उसे, कोई राह नहीं दिखाता उसे।

अचानक वह उठ खड़ा हो जाता है। आँसू पोंछकर सोचता है, “किसने बनाई है छुआछूत की व्यवस्था? किसने बनाया है किसी को नीच, किसी को ऊँच? भगवान ने? हर्गिज नहीं। वह ऐसा नहीं करता। वह सबको समान रूप से जन्म देता है। यह बुराई मनुष्य ने पैदा की है। मैं इसे मिटाकर रहूँगा।”



मन में बार-बार अपना निश्चय दुहराता हुआ वह युवक मुंबई लौट आता है। फिर वह जो कुछ करता है, उसके कारण आज सारा देश उसे बाबा साहब के नाम से स्मरण करता है।

शिक्षण-संकेत— बच्चों से हिन्दू समाज में व्याप्त कुरीतियों के संबंध में चर्चा करें। वर्ण-व्यवस्था का उल्लेख करते हुए इसकी हानियाँ बताएँ। प्रत्येक अनुच्छेद को विराम-चिह्नों का ध्यान रखते हुए पढ़ने के लिए कहें।

मध्यप्रदेश के महु नगर में रामजी नाम के एक सूबेदार मेजर थे। वे महार जाति के थे। 14 अप्रैल सन् 1891 ई. को उनके घर चौदहवीं संतान ने जन्म लिया। माता भीमाबाई 5 वर्ष तक उस बालक को पालकर स्वर्ग सिधार गईं। फिर चाची मीराबाई ने उसका पालन-पोषण किया। वे बालक को प्यार से 'भीवा' कहकर बुलाया करती थीं। बाद में यही बालक 'भीमराव रामजी अंबेडकर' कहलाया।

जिस वर्ष भीमराव का जन्म हुआ, उसी वर्ष रामजी नौकरी से छुट्टी पाकर रत्नागिरि के दपोली स्थान पर आ गए थे। यहीं भीमराव को पहली बार एक मराठी स्कूल में भर्ती कराया गया। चार वर्ष बाद वे पिता के साथ सतारा आ गए और सरकारी स्कूल में भर्ती हुए। यहाँ उन्हें सब लड़कों से दूर रखा जाता था। अध्यापक उनकी अभ्यास-पुस्तिका और कलम तक नहीं छूते थे। वे संस्कृत पढ़ना चाहते थे, किन्तु संस्कृत के अध्यापक ने उन्हें पढ़ाना स्वीकार नहीं किया। विवश होकर वे फारसी पढ़ने लगे। विद्यालय में उन्हें दिनभर प्यासा रहना पड़ता था, क्योंकि उन्हें पानी के बर्तनों में हाथ लगाने की अनुमति नहीं थी।

सन् 1905 में रामाबाई नाम की कन्या से भीमराव की शादी हो गई। उस समय वह नौ वर्ष की थी। शादी के बाद भीमराव अपने पिता के साथ मुंबई चले गए। वहाँ वे एलफिंस्टन स्कूल में भर्ती हुए। इस स्कूल में छुआछूत की कुप्रथा नहीं थी।

दो वर्ष बाद भीमराव ने मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की। महार जाति के लिए यह बहुत गौरव की बात थी। घर में खूब खुशियाँ मनाई गईं। भीमराव एलफिंस्टन कॉलेज में पढ़ने लगे। बड़ौदा के महाराज सयाजीराव गायकवाड़ ने प्रसन्न होकर उन्हें 25 रुपये मासिक छात्रवृत्ति देना आरंभ कर दिया। बी.ए. उत्तीर्ण होने पर महाराज ने उन्हें बड़ौदा में अपने दरबार में नौकरी दे दी। दुर्भाग्य से इसी वर्ष उनके पिता का स्वर्गवास हो गया।

महाराज के दरबार में भीमराव से कट्टर हिन्दू घृणा करते थे। चपरासी तक उनको फाइलें फेंककर देते थे। तंग आकर भीमराव ने नौकरी छोड़ दी। वे फिर महाराज से छात्रवृत्ति पाने में सफल हुए और उच्च शिक्षा के लिए कोलंबिया (अमेरिका) चले गए। अपनी जाति के वे पहले विद्यार्थी थे, जिन्हें विदेश जाने का अवसर मिला।

कोलंबिया विश्वविद्यालय में पढ़ते समय भीमराव को अनेक नए अनुभव हुए। वहाँ उन्हें सबका प्यार और समानता का व्यवहार मिला। सन् 1916 में वे कोलंबिया से लंदन पहुँचे। वहाँ एक वर्ष रहकर वे मुंबई लौट आए। महाराज गायकवाड़ ने उनको बड़ौदा बुला लिया और सेना में सचिव के पद पर नियुक्त कर दिया, किन्तु वहाँ फिर उनको घृणा का शिकार होना पड़ा। होटलों तक में उन्हें रहने का स्थान न मिला। इस व्यवहार से उनका हृदय टूट गया। उन्होंने नौकरी छोड़ दी और मुंबई जा पहुँचे।

विदेश में रहकर डॉ. अंबेडकर ने दो पुस्तकें लिखी थीं। धीरे-धीरे उनकी विद्वता की धाक जमने लगी। मुंबई के एक कॉलेज में उन्हें प्रोफेसर के पद पर नियुक्त कर लिया गया किन्तु यहाँ भी झंझट थी। धर्म के कट्टर लोग उनसे घृणा करते थे। किसी प्रकार भीमराव ने दो वर्ष निकाले। अन्त में यहाँ भी उन्हें त्यागपत्र देना पड़ा। अब उन्होंने छुआछूत की बुराई से लड़ने के लिए 'मूकनायक' नामक साप्ताहिक पत्र निकालना आरंभ किया। धन की कमी के कारण कुछ समय बाद ही उसे बंद करना पड़ा। भीमराव पढ़ने के लिए फिर लंदन चले गए। वहाँ तीन वर्ष रहकर उन्होंने अर्थशास्त्र में डाक्टर की उपाधि प्राप्त की। सन् 1923 में वे मुंबई लौट आए और उन्होंने वकालत आरंभ कर दी। एक वर्ष बाद कुछ मित्रों की सहायता से उन्होंने 'बहिष्कृत हितकारिणी सभा' की स्थापना की। तथाकथित अछूतों की समस्याएँ हल करना इस सभा का मुख्य उद्देश्य था। उन्होंने 'बहिष्कृत भारत' नामक समाचार पत्र भी निकाला। इसी वर्ष वे मुंबई विधानसभा के सदस्य बनाए गए। 27 मई, 1935 को बाबा साहब की पत्नी रामाबाई का देहांत हो गया जिससे वे बहुत दुखी हुए।

डॉ. अंबेडकर समाज में तथाकथित अछूतों को समानता का अधिकार दिलाना चाहते थे। वे उनकी आर्थिक हालत सुधारने के लिए संकल्प ले चुके थे। इतिहास की सच्ची जानकारी देने के लिए उन्होंने 'शूद्र कौन थे' नामक पुस्तक लिखी, जो बहुत लोकप्रिय हुई। भारत के वाइसराय ने उनकी योग्यता से प्रभावित होकर उन्हें अपने सचिव मंडल का सदस्य बनाया।

सन् 1947 में भारत के स्वतंत्र होने पर वे संविधान-सभा के सदस्य चुने गए। संविधान का प्रारूप उन्हीं की अध्यक्षता में तैयार हुआ। उन्होंने उसमें तथाकथित अछूतों को समानता का अधिकार दिलाया। राष्ट्र की एकता के लिए भी उन्होंने कई बातें संविधान में सम्मिलित कराईं।

संविधान निर्माण में बाबा साहब ने अभूतपूर्व परिश्रम किया।

15 अगस्त, 1947 को स्वतंत्र भारत की प्रथम सरकार बनी। डॉ. अंबेडकर को इस सरकार में कानून मंत्री का पद दिया गया। वे भारत के पुराने कानूनों में कई सुधार करना चाहते थे किन्तु प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू से उनका मतभेद हो गया। इसलिए सन् 1951 में उन्होंने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया।

सरकार से अलग होकर वे पूरी शक्ति से समाजसेवा में जुट गए। लोग उन्हें देवता की तरह पूजने लगे। वे जहाँ जाते थे, 'जय भीम' के नारों से आकाश गूँज उठता था। वे कट्टर हिन्दुओं के आगे झुकना नहीं जानते थे। उन्होंने सन् 1955 में भारतीय बौद्ध महासभा की स्थापना भी कर डाली और बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया। इस घटना से हिन्दू समाज में बड़ी खलबली मच गई। दुर्भाग्य से 6 दिसम्बर, सन् 1956 को अचानक लाखों पीड़ितों को छोड़कर डॉ. अंबेडकर स्वर्गवासी बन गए।

हिन्दू समाज डॉ. अम्बेडकर को 'बाबा साहब' कहकर सम्मान देता है। वे देश के पिछड़े और दलित समाज के प्राण थे। बचपन से ही उनमें कठिन परिश्रम करने की आदत थी। नित्य 18 घंटे पढ़ना उनके लिए सहज बात थी। सिनेमा और गपशप से वे दूर रहते थे। कठिनाइयाँ उनका मार्ग नहीं रोक पाती थीं। वे जो सोचते, वही करते थे। उनका भाषण बहुत प्रभावशाली होता था। तर्क करने की उनमें अनोखी शक्ति थी। वे किसी भी धर्म के विरोधी नहीं थे। उनकी लड़ाई तो उन बुराइयों से थी, जिन्हें मनुष्यों ने धर्म में उत्पन्न कर दिया है।

डॉ. अंबेडकर इसलिए महान हैं क्योंकि उन्होंने छुआछूत के पाप को नष्ट करने का प्रयत्न किया। उनके प्रयत्नों से सभी को कानून में समानता का अधिकार मिला। आज सभी बालक बालिकाएं साथ-साथ बैठकर पढ़ते हैं, खाते-पीते और खेलते-कूदते हैं। गाड़ियों, होटलों, तीर्थों, मंदिरों आदि सभी जगह वे समान रूप से आते-जाते हैं। हजारों वर्षों के भारतीय इतिहास की यह बहुत बड़ी घटना है। डॉ. अंबेडकर ने देश को छुआछूत के पाप से छुटकारा दिलाया। आनेवाली पीढ़ियाँ बाबा साहब अंबेडकर के महान कार्यों को स्मरण कर गौरव का अनुभव करती रहेंगी।

शब्दार्थ

स्मरण	—	याद
प्रभावशाली	—	प्रभाववाला
आधारित	—	आधार में, सहारे में
समानता	—	बराबरी
बहिष्कृत	—	बाहर निकाला हुआ
तथाकथित	—	जैसा कहा गया है लेकिन जिसके होने में संदेह हो
रत्नागिरि	—	महाराष्ट्र के एक जिले का नाम
रूढ़िवादी	—	पुरानी विचारधारा को माननेवाले

प्रश्न और अभ्यास

- प्रश्न 1.** बाबा अंबेडकर को किस नाम से जाना जाता है ?
- प्रश्न 2.** बड़ौदा के महाराज ने डॉ. अंबेडकर को क्या सहायता दी?
- प्रश्न 3.** डॉ. अंबेडकर को बड़ौदा के महाराज की नौकरी क्यों छोड़नी पड़ी?
- प्रश्न 4.** नौकरी छोड़ने के बाद उन्होंने क्या संकल्प लिया?
- प्रश्न 5.** भारतीय संविधान से तथाकथित अछूतों को क्या लाभ हुआ?
- प्रश्न 6.** डॉ. अंबेडकर महान क्यों माने जाते हैं?
- प्रश्न 7.** देश को डॉ. अंबेडकर की सबसे बड़ी देन क्या है?
- प्रश्न 8.** अपने गाँव या शहर में प्रचलित किसी कुरीति पर दो वाक्य लिखो।
- प्रश्न 9.** अपने गाँव या शहर में प्रचलित कुरीति को दूर करने के लिए क्या उपाय करना चाहिए?

भाषातत्त्व और व्याकरण

समझो

- 'छोटी-बड़ी समस्याओं को तो हमें प्रायः झेलना पड़ता है।' इस वाक्य में 'छोटी-बड़ी' परस्पर विलोम शब्द हैं।

प्रश्न 1. इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों और उनके परस्पर विरोधी शब्दों को एक साथ एक-एक वाक्य में प्रयोग करो।

पाप, उत्तीर्ण, पक्ष, सफल, दुर्भाग्य।

- इन वाक्यों को पढ़ो—

क. कक्षा में बच्चे ध्यानपूर्वक पढ़ रहे हैं।

ख. अभी मध्य अवकाश है, हमारी कक्षा के बच्चे पढ़ नहीं रहे।

ग. क्या तुम्हारी कक्षा के विद्यार्थी शिक्षक से पूछकर कक्षा से बाहर जाते हैं ?

घ. कक्षा में शोर मत करो।

ऊपर लिखे चारों वाक्य चार प्रकार के हैं। पहले वाक्य में कार्य हो रहा है। ऐसे वाक्य 'विधिवाचक वाक्य' कहलाते हैं। दूसरे वाक्य में कार्य नहीं हो रहा है। ऐसे वाक्य 'निषेधात्मक वाक्य' कहलाते हैं। तीसरे वाक्य में प्रश्न पूछा गया है। ऐसे वाक्य 'प्रश्नवाचक वाक्य' कहलाते हैं। चौथे वाक्य में आदेश दिया गया है। ऐसे वाक्य 'आदेशात्मक वाक्य' कहलाते हैं।

प्रश्न 2. नीचे लिखे वाक्यों को उनके सामने कोष्ठक में लिखे वाक्यों में परिवर्तित करो—

क. 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्र भारत की प्रथम सरकार बनी। (प्रश्नवाचक वाक्य)

ख. कल तुम सब 'बाबा साहब अंबेडकर' पाठ याद करके आए थे। (आदेशात्मक वाक्य)

ग. जाति-व्यवस्था ईश्वर ने बनाई है। (निषेधात्मक वाक्य)

घ. उन्होंने अपने पद से त्यागपत्र नहीं दिया। (विधिवाचक वाक्य)

• निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़ो—

क. बालक घर आ गया।

ख. वह खाना खा रहा है।

ये दोनों सरल वाक्य हैं। अब यह वाक्य देखो, 'बालक घर आ गया और वह खाना खा रहा है।' यहाँ 'और' शब्द से दो सरल वाक्यों को जोड़कर एक संयुक्त वाक्य बनाया गया है।

प्रश्न 3 इस पाठ में आए पाँच संयुक्त वाक्य छाँटकर लिखो।

योग्यता-विस्तार

- डॉ. अंबेडकर के जीवन के अन्य प्रेरक प्रसंग खोजो और उन्हें बालसभा में सुनाओ।
- तुम्हें अपने समाज की कौन-सी रीतियाँ बुरी लगती हैं ? उन पर चर्चा करो।

